भाग – 3

भाग – 3

अध्याय – 13

कृपाल की यादें

– ताई हरदेवी जी – 1976

संत कृपाल सिंह जी से मेरा सम्पर्क 1924 में हुआ। उन दिनों हम रावलपिंडी (अब पकिस्तान) में रहते थे । एक दिन एक गुरद्वारे से किसी ने ऐलान किया कि एक सिख ऐसा है जिस पर अपने पुत्र की मृत्यु का जरा सा भी असर नहीं हुआ। इससे हमारे धर्म का नाम ऊंचा हुआ है। उस समय मेरे पति राजा राम भी गुरद्वारे में बैठे थे। वे सुन कर सोचने लगे कि जरूर वह हमारे सत्गुरु बाबा सावन सिंह का शिष्य होगा। मेरे पति से यह सुनकर मेरी सास ने हमारे सारे परिवार को उस आदमी से मिल कर उसके पुत्र की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने के लिए कहा। जब हम वहाँ पहुँचे तो संत कृपाल सिंह ने हमारे लिए चाय और स्नैकस् का प्रबन्ध किया और कहने लगे कि मेरे पुत्र का इस दुनिया से लेखा – जोखा खत्म हो गया था और वह अपने घर चला गया है, इस पर मैं दुखी क्यों होऊं। हमने उन्हें बिल्कुल असर – विहीन और शांत पाया। इसके बाद संत कृपाल सिंह जी का हमारे घर आना जाना शुरू हो गया और उन्होंने अपने सत्गुरु के हुक्म से हमारे घर पर ही सत्संग करना शुरू कर दिया। संत कृपाल सिंह रावलपिंडी में 15 महीने रहे। इस दौरान उन्होंने सत्संगियों और सत्गुरु के बीच प्यार का बंधन दृढ़ कर दिया। फिर उनकी बदली लाहौर की हो गई और 500 के करीब सत्संगी रावलपिंडी स्टेशन पर उन्हें विदायगी देने आये।

2. एक बार मैं और मेरे पति राजा राम ब्यास में बाबा सावन सिंह के

पास गये और उन्हें रावलपिंडी आने के लिए प्रार्थना की। बाबा जी ने कहा कि जब भी आप मुझे बुलाओगे मैं आऊंगा। यह सुनकर हम रावलपिंडी वापस आ गये और मेरे पति ने बाबा जी के सत्संग के लिए तैयारियां शुरू कर दीं । तैयारियां जोरों पर थीं कि इतने में संत कृपाल सिंह जी को लाहौर में इसके बारे में पता चला तो उन्होंने मेरे पति को पत्र लिखा कि आप बाबा जी के सत्संग की तैयारियां तो कर रहे हो परन्तु क्या उन्होंने आने की कोई तारीख भी दी है? राजा राम ने कहा कि उन से यह पूछने की क्या जरूरत है जब कि उन्होंने खुद ही वायदा किया है कि जब हम चाहेंगे तब वे रावलपिंडी आ जायेंगे। अब हम उन्हें आने के लिए चाह रहे हैं इसलिए उन्हें आना चाहिये। इतने में बाबा जी ने राजा राम को पत्र लिखा कि वे नहीं आ रहे हैं। इस पर राजा राम जी ने सारी तैयारियां रोक दीं और अपने परिवार को बाबा जी के आने तक खाना पकाने से भी रोक दिया। उन्होंने खुद अपना कमरा अन्दर से चिटकनी लगा कर बन्द कर लिया और परिवार को उसे डिस्टर्ब न करने के लिए कहा। तीन – चार दिन के बाद कुछ सत्संगियों ने बाबा जी को तार दी कि ये सभी लोग भूखे मर रहे हैं और केवल पानी पर ही जीवित हैं। इस पर बाबा जी ने एक टैलीग्राम दी कि नानक सिंह नाम का भाई मेरा सन्देश लेकर अमुख ट्रेन से फलां तारीख को पहुँचेगा। निश्चित तारीख और समय पर मैं कुछ सत्संगियों के साथ रेलवे स्टेशन पर पहुँची तो यह देख कर हमारी हैरानी की हद न रही कि बाबा सावन सिंह जी ट्रेन के दरवाजे में खुद खड़े थे। हमने उनसे अर्ज की कि टैलीग्राम में तो आपने कहा था कि नानक सिंह नाम का भाई आ रहा है। बाबा जी ने उत्तर दिया कि मुझे ही नानक सिंह समझ लो। फिर बाबा जी को साथ लेकर सभी लोग हमारे घर पहुंचे। बाबा जी ने राजा राम के कमरे का दरवाजा तुड़वाया और देखा कि वह निश्चेत अवस्था में एक कोने में पड़ा है। बाबा जी ने उसके सिर को अपनी गोद में लेकर कहा कि राजा राम मैं आ गया हूँ, मैं आ गया हूँ। जब राजा राम को होश आई तो उसने बाबा जी को वहाँ देखा और ऊंचा – ऊंचा रोना शुरू कर दिया कि पंखा चलाओ। बाबा सावन सिंह जी ने कहा, "तुमने मुझे आने के लिए कहा

क्यों नहीं?" राजा राम बोला कि यह सब कसूर कृपाल सिंह का है जिसने अपने और आपके लिए हमारे दिलों में इतना गहरा प्रेम भर दिया है जिस से ऐसी बातों का होश ही नहीं रहा। बाबा जी ने कहा कि जितने दिन तुम चाहोगे मैं यहाँ रहूंगा। बाबा जी हमारे घर पर पांच दिन तक रहे। फिर बाबा जी ने राजा राम से कहा कि क्या मैं अब जा सकता हूँ। राजा राम ने उत्तर दिया, "मैं कौन होता हूँ आपको यह कहने वाला कि आप जाओ या रहो।" बाबा जी इसके बाद दो दिन और रहे। हर रोज सत्संग होता था और सत्संगी सेवा करते थे। बाबा जी ने कहा, "शिष्य वह होता है जो गुरु के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दे और गुरु वह होता है जो देता ही देता है लेता कुछ नहीं।" बाबा जी कभी किसी से मुफ्त में पानी का एक गिलास भी नहीं पीते थे। इसलिए उन्होंने मेरे पति को वहां रहने के बदले में उपयुक्त पैसे दिये और मेरे पति को वे पैसे लेने ही पड़े। बाबा जी के सत्संगों का वहां इतना गहरा असर हुआ कि रावलपिंडी और नजदीक के बहुत से लोगों ने नामदान ले लिया।

3. मैं और मेरे पति ब्यास से वापस आते समय संत कृपाल सिंह जी को लाहौर में अक्सर मिलकर ही आते थे। एक बार हम ब्यास से आते हुए रात के 11 बजे लाहौर पहुँचे तो वहाँ संत कृपाल सिंह जी को बाबा जी की याद में कविताएं लिखते हुए आंसू बहाते पाया। कृपाल सिंह जी ने मुझे कविता देकर कहा कि यह बाबा सावन सिंह जी के सामने सुना देना। हमने संत कृपाल सिंह जी को साथ लेकर उसी समय वापस ब्यास को जाने का प्रोग्राम बनाया। ब्यास पहुँच कर हमने सारी हालत बाबा जी को बताई और वह कविता बाबा जी को सुनाई। बाबा जी ने दोनों हाथ संत कृपाल सिंह के कंधों पर रख कर कहा, "कृपाल सिंह! मैं तेरा हूँ, इस तरह रोना धोना बन्द करो।"

4. एक बार डेरा ब्यास पहुँचने पर बाबा सावन सिंह ने मुझे अपने प्रयोग किये फटे पुराने दो तौलिये दिये और हिदायत कि ये आगे किसी को मत देना। हमारे लिये यह एक रूहानी उपहार था। रास्ते में हम संत कृपाल सिंह जी को इस उपहार के बारे में बताने के लिए लाहौर पहुँचे।

संत कृपाल सिंह जी हमें देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे तथा साथ ही हमारे भी आंसू भी बह निकले। सत्संगियों का आपसी मिलाप प्रभु-कृपा से ही होता है। उस समय मैंने बताया कि बाबा जी ने मुझे यादगार के तौर पर अपने दो तौलिए दिये हैं और साथ ही हिदायत की है कि ये आगे किसी को मत देना। संत कृपाल सिंह जी ने उन तौलियों का दर्शन कराने को कहा। वह समय बड़ा पवित्र था जिसके बारे में वही जानता है जिसने वह अपनी आंखों से देखा है। वातावरण सत्गुरु प्रेम और भक्ति से भरपूर था। लगातार रोते हुए संत कृपाल सिंह जी ने वे तौलिए अपने हाथों में लिए, हृदय से लगाये और फिर सिर पर रखे। जब मैंने वे तौलिए वापस लेने चाहे तो वे उन्हें जुदा न कर सके। उन्होंने रात के चार बजे तक रोते हुए वे तौलिए अपनी छाती से चिपकाए रखे। फिर हमने संत कृपाल सिंह जी को साथ लेकर वापस ब्यास जाने का फैसला किया। जब हम सुबह 6 बजे के करीब वहां पहुंचे और तौलियों के बारे में लिखी संत कृपाल सिंह जी की कविता बाबा जी को सुनाई तो यह उन के दिल पर मार कर गई और उन्होंने कहा, "कृपाल सिंह! मैं तेरा हूँ, मेरा सब कुछ ही तेरा है।" उन्होंने अपना हाथ कृपाल सिंह के सिर पर रखकर कहा, "मेरा सब कुछ तेरा है।" बाबा जी ने वे तौलिए संत कृपाल सिंह को देने के लिए कहा। हिचकिचाहट में मैंने बाबा जी को बताया कि आपने तो मुझे हिदायत की है कि ये तौलिए आगे किसी को मत देना, इसलिए मैं नहीं दे रही। बाबा जी ने फिर जोर देकर कहा, "ये दोनों तौलिए कृपाल सिंह को दे दो।"

5. एक बार बाबा सावन सिंह जी रावलपिंडी आये तो हम ने उन्हें अपनी फोटो खिंचवाकर हमें देने के लिए प्रार्थना की। बड़ी मुश्किल से वे फोटो खिंचवाने के लिए सहमत हुए। इससे पहले उनकी कहीं भी फोटो नहीं बनी थी। फिर एक फोटोग्राफर को बुलाया गया, फोटो खींची गई परन्तु इसके बाद बाबा जी ने हुक्म दिया कि इस फोटो की नेगेटिव समेत सारी कापियां मुझे दे दो तथा कोई कापी किसी को मत देना। बाबा जी का अगला प्रोग्राम गुजरांवाला का था जहाँ बहुत सी संगत आई हुई

थी। लोगों को पता चल गया कि बाबा जी ने राजा राम के पास फोटो खिंचवाई है परन्तु साथ ही हुक्म दिया है कि यह किसी को न दी जाये। वहां रूड़चन्द नामक एक सत्संगी ने बाबा जी से फोटो मांगी। संत कृपाल सिंह जी व हम उस समय वहाँ हाजिर थे। बाबा जी ने कहा, "रूड़चन्द, आपको मेरी फोटो नहीं मिल सकती और अगर कृपाल सिंह भी मेरी फोटो मांगेगा तो मैं उसे भी यह नहीं दूंगा।" लोगों को पता था कि बाबा जी संत कृपाल सिंह से कितना प्यार करते हैं। हम सब हैरान रह गये। इस पर संत कृपाल सिंह जी ने खड़े होकर नम्रता-भाव से प्रार्थना की, "हजूर, आप भले ही अपनी फोटो न दें परन्तु कृपा करके हमारे ऊपर अपना दयालु हाथ बनाये रखें।" उन्होंने आगे प्रार्थना की, "हजूर अगर मैं बाबा जैमल सिंह जी की फोटो कहीं से ले आऊं तो आप कैसी प्रसन्नता महसूस करोगे?" इस पर बाबा सावन सिंह जी ने कहा, "कृपाल सिंह! अगर तुम मेरे सत्गुरु की फोटो ले आओ तो अपनी फोटो का तो क्या कहना, मैं अपना सब कुछ तुम पर न्यौछावर कर दूंगा।" संत कृपाल सिंह जी को पता था कि बाबा जैमल सिंह जी की फोटो ब्रिटिश आरमी पैंशनर्ज़ रिकार्ड में मिल सकती है। संत कृपाल सिंह जी को आरमी रिकार्ड में सम्बन्धित कागज ढूंढते-ढूंढते तीन साल लग गये, तब जाकर उन्हें वह कागज मिला जिस पर वह फोटो लगी थी। उन्होंने उसकी फोटो बनवाई और साथ लेकर बाबा सावन सिंह जी के पास चले गये। जब संत कृपाल सिंह ने बाबा सावन सिंह को जाकर बताया कि जिस फोटो की आप को तलाश है वह मैंने ढूंढ ली है और इस समय मेरे पास है तो बाबा जी ने वहां उपस्थित संगत को जाने के लिए कहा क्योंकि उनका कृपाल सिंह जी के साथ एक जरूरी काम है। मैं और मेरे पति राजा राम भी वहां थे। जब वह फोटो बाबा जी ने देखी तो उन्होंने उसे सीने से लगाया और अपने सिर पर रखा। फिर उनकी आंखों से अपने सत्गुरु की याद में बरबस आंसू बह निकले और उन्होंने फरमाया, "इसके बाद मेरी फोटो जो भी लेना चाहे, सभी को दे देना।" संत कृपाल सिंह जी आम तौर पर संगत को सम्बोधित किया करते थे कि आप सब बहुत खुशकिस्मत हैं

कि आपको अपने सत्गुरु की आवाज़ सुनने को मिलती है और फिल्मों में उनके दर्शन करने को मिलते हैं परन्तु मैं अपने सत्गुरु की आज आवाज नहीं सुन सकता । संत कृपाल सिंह जी ने उस समय मुझे यह कविता सुनाने को कहा, "आपकी फोटो असली तौर पर अच्छी है क्योंकि हम इसे अपने सीने और सिर पर जितनी देर चाहें रख सकते हैं और यह कभी भी हमें ऐसा करने से झिड़कती नहीं।"

6. बाबा सावन सिंह जी ने 2 अप्रैल, 1948 को यह नश्वर देह त्याग दी। उनकी दुनियावी रस्में पूरा करने के बाद संत कृपाल सिंह जी डेरा ब्यास छोड़ कर 6 अप्रैल, 1948 को अपने पुत्र दर्शन सिंह के घर दिल्ली पहुँचे। इस के 8 दिन बाद जब मैं गुरबख्श सिंह के साथ सवेरे 8 बजे उनके दर्शनों को दर्शन सिंह के घर गई तो वहां चारपाई खाली देख कर हम घबरा गए। बाग में ढूंढा परंतु महाराज जी कहीं भी नजर नहीं आए। घरवालों को कोई खबर मालूम नहीं थी। किताबों का एक बैग जो वे हमेशा साथ रखते थे वहां चारपाई के पास नहीं था। हम घबरा गए कि सच में वे कहीं चले गए हैं क्योंकि वे किताबों के बैग को अपने से कभी अलग नहीं करते थे। वहां से निकल कर हम ढूंढते हुए बस अड्डे की तरफ चल पड़े जहां रेल के छोटे पुल पर एक सत्संगी रेढ़ी लगा कर चीज़ें बेचता हुआ मिला। पता करने पर उसने बताया कि मैंने उन्हें देखा है और उन्होंने आधा घण्टा पहले हरिद्वार के लिए बस पकड़ी है। मैंने गुरबख्श सिंह से कहा कि चलो हरिद्वार चलें तो गुरबख्श सिंह बोला कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, इसलिए मेरा जाना मुश्किल है। इस पर अगली हरिद्वार जाने वाली बस में मैं टिकट लेकर बैठ गई और गुरबख्श सिंह से कहा कि अगर महाराज जी का मुझे कहीं पता चलेगा तो मैं आपको खबर कर दूंगी। हरिद्वार पहुंच कर मैं ढूंढती रही परंतु कहीं नज़र न आए। वहां हरिद्वार में एक सत्संगी मंगत राम रहता था जिसकी लाहौर में कपड़े की दुकान हुआ करती थी। मैं उस के घर गई तो वह खाना खा रहा था। मैंने जाकर एकदम पूछा कि क्या यहां महाराज जी आए हैं? वह अचम्भित होकर एकदम बोला कि यहां तो नहीं आए और रोटी का जो लुकमा उसने मुंह में डाला था उसी के साथ एकदम घबरा कर खड़ा हो

गया और मेरे साथ ढूंढने के लिए निकल पड़ा। एक दूसरे सत्संगी पन्नालाल के घर देखा, परंतु वहां भी न मिले। हरिद्वार कई जगह ढूंढने के बाद अचानक मेरे मन में विचार आया कि वे ऋषिकेश गए होंगे। इस पर हमने वहां से बस पकड़ी और ऋषिकेश पहुंच गए। हम लोगों से पूछते थे कि क्या सफेद कपड़ों वाला कोई साधु आपने देखा है। ऋषिकेश में ढूंढते हुए हमें 10 – 15 दिन हो गए। कपड़े हमारे बिल्कुल फट गए, जूते टूट गए और पैरों से खून बहने लगा। नए जूते और कपड़े खरीदने के लिए हमारे पास पैसे नहीं थे, रोने के बिना हमें कुछ सूझता नहीं था। सत्संगी सत्संगी का वह प्यार ब्यान से बाहर है। मंगत राम मुझे रोने से चुप कराता था और मैं मंगत राम को चुप कराती थी। हमने लक्ष्मण झूले के पास ढूंढा, स्वर्ग आश्रम में पता किया परंतु महाराज जी का कहीं कुछ पता न चला। दिल में एक बार यह ख्याल भी आया कि पानी में छलांग लगा कर मर जाते हैं। फिर हम लक्ष्मण झूले के पास भिखारियों के ठेकेदार से मिले जिन्होंने वहां भिखारी बिठाए होते हैं और उनको नाम – मात्र पैसे देकर बाकी खुद रख लेते हैं। हमने उस से कहा कि हमारा एक आदमी इधर गुम हो गया है, शायद यहां बैठने से मिल जाए। आप हमें भिखारियों में शामिल कर लो और जितने भी पैसे मिलेंगे, हम हिसाब अनुसार आपको दे देंगे। हमें क्योंकि मांगना नहीं आता था, इसलिए हमें पैसे भी कोई नहीं दे रहा था। कुछ दिन बाद ठेकेदार ने कहा कि अगर आप पैसे नहीं मांगोगे तो मैं आपको यहां से उठा दूंगा। हमने उस से प्रार्थना की कि हम अब जरूर मांगना शुरू करेंगे। हम वहां यह गाते थे:

गंगा जी मेरी राम मिला
लिया दिया तेरे संग चलेगा, गंगा जी मेरी राम मिला।

हमारी आवाज़ में दर्द था। लोग समझते कि इनका जरूर कोई न कोई मर गया होगा। एक सप्ताह हमें वहां बैठे हो गया था परंतु महाराज जी का कहीं कोई पता न चला। फिर वहां से उठ कर हम ने पुल पार करके एक ढाबे वाले से महाराज जी के बारे में पूछा। उस ने बताया कि बिल्कुल ऐसी ही शक्ल का एक साधु हमारे ढाबे पर कल शाम आया था,

उनको खांसी आ रही थी। उन्होंने यहां चाय पी और फिर ऊपर गंगोत्री की साइड चले गए हैं। यह सुन कर हमें आशा की कुछ किरण नज़र पड़ी और हम ढूंढते – ढूंढते दरिया के ऊपर की साइड तीन मील तक चलते रहे। पांव हमारे खूनो – खून हो गए। वहां गए तो एक मन्दिर के पुजारी ने बताया कि इस किसम का एक इन्सान यहां आया था और रात यहां रह कर स्वर्ग आश्रम की तरफ चला गया है। उस ने यह भी बताया कि उनके पास इसी तरह का एक बैग था। हम वहां से वापस चलने लगे तो उन्होंने कहा कि देर हो गई है, रात पड़ने वाली है और रास्ते में जंगली जानवरों का खतरा है, इसलिए रात यहीं रुक जाओ। हम इस सब की परवाह किए बगैर स्वर्ग आश्रम की तरफ चल पड़े और कुछ दूर चलने पर हमें करीब 110 साल का एक साधु मिला तो उस से हम ने महाराज जी के बारे में पूछा। उस ने बताया कि ऐसे साधु नीलकण्ठ में एक जगह पर एक पत्थर पर बैठे होते हैं। उस ने हमें पूछा कि वे आप के क्या लगते हैं तो हम ने कहा कि वह हमारा परमात्मा है, सत्गुरु है तथा सब कुछ है। हम फिर उस के बताए मुताबिक साढ़े तीन मील जंगल में ऊपर की तरफ निकल गए जहां पहुंचने में हमें डेढ़ दिन लगा क्योंकि रास्ता उबड़ – खाबड़ तथा पथरीला था। रास्ते और नालों को पार करते हुए हमारे पैरों से बहुत खून निकलने लगा। वहां पहुंच कर एक और साधु मिला जिसने हमें साथ लेकर महाराज जी को बड़े पत्थर पर चौकड़ी मारे अभ्यास में बैठे हुए दिखा दिया। कुटिया के साधु ने कहा कि इनको बुलाना नहीं, ये नाराज़ हो जाते हैं। अब हम उनके सामने खड़े हैं और डर है कि कहीं बुलाने पर नाराज न हो जाएं। मैं कहती हूं, मंगत राम आप बुलाओ, मंगत राम कहता है, तुम बुलाओ। आखिर मैंने आगे बढ़कर महाराज जी को हाथ से हिलाया। ऐसा महसूस होता था जैसे हम शायद कोई सपना ही न देख रहे हों या कि सचमुच में महाराज जी हमें मिल गए हैं। आखिर महाराज जी ने 'सत्गुरु सत्गुरु' करते हुए आंख खोली और हमें देख कर बहुत अचम्भित हुए। हमारी आंखों से बरबस आंसू बह रहे थे और पांवों से खून बह रहा था। वे हमें बड़े प्यार से चुप कराने लगे तथा थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा कि आप मुझ से मिल लिए

हैं अब वापस चले जाओ और मेरे बारे में किसी को कुछ मत बताना, नहीं तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा। उन्होंने हमें कहा कि मुझे अकेला छोड़ दो और डिस्टर्ब मत करो। हमने उन्हें प्रार्थना कि हम आपको डिस्टर्ब नहीं करेंगे और दिन में केवल एक बार थोड़ा खाना लेकर ही आपके पास आया करेंगे। बड़ी मुश्किल से ही वे हमारी इस बात पर सहमत हुए। हमने उनका हुक्म मानने का वायदा किया। जहां महाराज जी रह रहे थे वह जगह बड़ी ऊंची–नीची और पहाड़ियों वाली थी, वहाँ पहुंचने के लिए हमारे पांव दर्द करने लगे और उनसे खून बहने लगा। एक दिन जब उन्होंने मंगत राम के पांव की तरफ देखा तो उन्होंने हमें यह कष्ट उठाने के लिए अफसोस जाहिर किया। एक बजुर्ग साधु से हमने प्रार्थना की कि किसी तरह संत कृपाल सिंह जी को निचली पहाड़ियों पर या उसी साधु के मकान के बरामदे में या जयदयाल गोयनिका साधु की गुफा में अपनी रिहायश शिफ्ट करने के लिए मनाएं। उस साधु ने हमारी प्रार्थना मान कर महाराज जी से निचली पहाड़ियों पर रहने को कहा। महाराज जी ने इस सुझाव पर विचार करने का भरोसा दिया। एक दिन हमें वहां पहुंचने में एक बड़ा नाला पार करने में बड़ी दिक्कत आई तथा मंगत राम बहते बहते बचा। वहां हम शेर की दहाड़ सुनकर घबरा गये, उसी समय महाराज जी नाले की दूसरी साईड पर नजर आये। उन्होंने हमें हौसला रखने को कहा और बताया कि वहां कोई शेर नहीं था, मैं ही आपको टैस्ट करने के लिए डरा रहा था। उन्होंने कहा कि नाले के आधा मील ऊपर जाकर एक पत्थर से नाला पार कर लो। फिर उन्होंने खाना खाया। अगले दिन हमारी मुश्किलों को दूर करने के लिए वे नीचे जय दयाल गोयनिका साधु की गुफा में आकर रहने लगे। हम वहां से एक मील दूर स्वर्ग आश्रम में रहते थे। कभी–कभी वे दो दो दिन लगातार अभ्यास में मगन रहते और हमें खाना खिलाये बगैर वापस लौटना पड़ता।

7. एक दिन हमने कुछ साधुओं को गंगा के किनारे भागते देखा क्योंकि प्रशासन की तरफ से यह सन्देश आया था कि गंगा में बाढ़ आ रही है और पानी 8 फुट तक ऊंचा हो सकता है। उस समय महाराज जी गंगा के बीच एक पत्थर पर जिसके चारों तरफ पानी था, अभ्यास में

मगन थे। हमने एक किश्ती वाले को उनके पास ले जाने को कहा परन्तु उसने बढ़ रहे पानी के कारण इन्कार कर दिया। तब हमने महाराज जी को ऊँची आवाजें लगाई और उनकी तरफ पत्थर के छोटे टुकड़े फैंके। क्योंकि वे भजन में पूरी तरह खोये हुए थे इसलिए इन चीजों का उन पर कोई असर न पड़ा। इतने में पानी उनके पैर तक पहुंच गया। हम घबरा कर रोने लगे। तभी उन्होंने अपनी आंखें खोलीं और अपने हाथ से हमें घबराहट में न आने का इशारा किया। वे पानी में कूदे और सकुशल बाहर आ गये तो हमारी सांस में सांस आई।

8. बाबा सावन सिंह जी की याद में कविताएं लिखते हुए महाराज जी के आम तौर पर आंसू बहने शुरू हो जाते थे जिससे उनका सिरहाना बिल्कुल भीग जाता था । एक दिन जब मैंने देखा कि सिरहाना पूरी तरह भीग गया है और मिट्टी से लिबड़ गया है तो मैंने उसे उठाकर महाराज जी से पूछा कि क्या मैं इसको गंगा में धो लाऊं । महाराज जी ने वह सिरहाना मुझ से छीन कर कहा कि ये आंसू बहुत कीमती हैं। ऋषिकेश में उनका ज्यादा समय कविताएं लिखने, किताबें पढ़ने, अन्दर के गुप्त भेद कोडिड भाषा में लिखने और भजन अभ्यास करने में व्यतीत होता था।

9. एक बार हमें सोता छोड़कर रात के 2 बजे के करीब महाराज जी चुपचाप वहां से निकल गये और गंगा के ऊपर की तरफ करीब 6 किलोमीटर चले गये। जब हम जागे तो महाराज जी को न पाकर बड़े दुखी हुए। हम दोनों दरिया के नीचे की तरफ यह पूछते हुए भागे जा रहे थे कि किसी ने कहीं सफेद कपड़ों वाले साधु को देखा है। जब हम नीचे रस्सों के पुल के पास पहुंचे तो मेरे मन में विचार आया कि महाराज जी इससे आगे नहीं गये होंगे। फिर एक छोटे मन्दिर के पुजारी से पता करने पर मालूम हुआ कि इस प्रकार का एक साधु दरिया के ऊपर की तरफ गया है। फिर हम 6 किलोमीटर ऊपर की तरफ चले तो देखा कि महाराज जी तौलिया नीचे बिछाकर लेटे पड़े हैं और उनकी पगड़ी एक साईड में पड़ी है। हम वहाँ सिसकियां भरते बैठ गये। कुछ समय बाद महाराज जी

ने 'सत्गुरु सत्गुरु' कहते हुए आंखें खोलीं और हमें देखकर पूछने लगे कि तुम्हें यहां किसने भेजा है। तब मैंने कहा कि जो प्रभु आपको यहां लाया है उसी ने हमें आपकी तलाश में यहां भेजा है। तब महाराज जी ने मंगत राम से सुलतान बाहू की कविता पढ़ने को कहा और कविता सुनकर सभी प्रभु प्रेम में सिसकियां भरने लगे।

10. इस समय तक मंगत राम की पत्नी भी ढूंढते-ढूंढते वहां पहुंच चुकी थी। मैंने उसको महाराज जी का अता-पता बताने के लिए गुरबख्श सिंह को दिल्ली टैलीग्राम देने के लिए कहा। उसने ऐसा ही किया। टैलीग्राम में लिखा था कि महाराज जी हरिद्वार में अमुक स्थान पर हैं तथा महाराज जी का कोई प्यारा अथवा उनके पुत्र आकर उनको प्रार्थना पूर्वक दिल्ली वापस ले जाएं। जब महाराज जी को इस बात का चला तो वे बड़े नाराज हुए और कहने लगे कि आज के बाद मैं खाना नहीं खाऊंगा और न ही तुम्हारे साथ जाऊंगा। पांचवें दिन गुरबख्श सिंह महाराज जी के बच्चों और परिवार के साथ वहां पहुंच गया। वे सभी लोग 3-4 दिन वहां रहे और महाराज जी को साथ चलने के लिए लगातार प्रार्थना करते रहे परन्तु महाराज जी ने बिल्कुल न कर दी। आखिर थककर वे अपने घरों को वापस लौट गये।

11. एक दिन महाराज जी ने रानी की कोठी छोड़ने का फैसला किया और बोले कि अब हम हरिद्वार जायेंगे और गंगा पार करके नील धारा के पास ऐसी जगह ठहरेंगे जहां हमें कोई ढूंढ न सके। इस प्रकार हम हरिद्वार आ गये और महाराज जी मौनी बाबा के आश्रम में ठहर गये। मौनी बाबा ने 18 साल से मौन धारण किया हुआ था। कुछ दिनों के बाद हम जंगल में एक स्थान पर डेढ़ महीना रहे। महाराज जी नील धारा में एक पत्थर पर अभ्यास में बैठे रहते, उनके नजदीक ही मैं बैठी रहती और मंगत राम थोड़ा दूरी पर भजन में बैठे रहते । एक दिन मैंने देखा कि एक सुन्दर स्त्री साड़ी पहने हुए पानी पर से चलती महाराज जी को ओर आ रही है । मैंने महाराज जी को आवाज लगाई कि कोई बुरी आत्मा आ रही है जो आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकती है। उस स्त्री ने

महाराज जी को माथा टेका और लोप हो गई। महाराज जी ने आकर हमें बताया कि वह स्त्री गंगा मैया थी।

12. डेढ़ महीने के बाद महाराज जी ने देहरादून जाने का विचार बनाया और वहां बाबा सावन सिंह जी के एक सत्संगी के घर ठहरे । वहां बाबा सावन सिंह जी के कई शिष्यों ने जो महाराज जी के मिशन के विरुद्ध थे उन्हें अपने मिशन से हटाने के लिए कई मुश्किलें खड़ी करने की कोशिश की इतना कि एक दिन एक आदमी ने महाराज जी की समर्थता जानने के लिए एक बड़ी सुई उनकी कमर के नीचे चुभो दी जिससे महाराज जी के कपड़े खून से लथ-पथ हो गये परन्तु महाराज जी के चेहरे पर दर्द की कोई शिकन नहीं थी । मैंने उस आदमी को पकड़ कर गुस्से से थप्पड़ जड़ दिया। तब मैंने अपने दुपट्टे से दाँतों की मदद द्वारा मुश्किल से उस सुई को निकाला क्योंकि वह बहुत गहरी घुस गई थी। मैंने खून को पानी से धोया। महाराज जी ने कहा कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं। इस प्रकार बहुत से लोग महाराज जी को कई तरीकों से टैस्ट करने के लिए आये ताकि वे पब्लिक में यह दर्शा सकें कि ये पूर्ण सत्गुरु नहीं है परन्तु उन में से कोई सफल न हुआ। कुछ दिनों के बाद महाराज जी दिल्ली चले आये और वहां 35, राजपुर रोड रहकर सत्संग का काम शुरू कर दिया ।

13. दिसम्बर 1948 तक संगत काफी बढ़ गई। इस समय तक महाराज जी ने नाम दान का काम भी शुरू कर दिया था। महाराज जी एक दिन कहने लगे कि क्योंकि संगत बढ़ रही है, कुछ आदमी कोई मुश्किल भी खड़ी कर सकते हैं जिसके लिए हमें चौकस रहना चाहिये। एक बार मैंने घड़े से ज्यों ही पानी का गिलास भरा तो वह गन्दा और रंगीन नजर आया। महाराज जी ने पूछा कि क्या बात है। तो मैंने बताया कि पानी गन्दा है और मैंने बालटी लेकर सारा पानी उसमें डाल दिया। गुरबख्श सिंह के कुत्ते ने पानी पीना शुरू किया तो वह दो मिनट में ही मर गया। जाहिर था कि किसी ने पानी में विष मिला दिया था। महाराज जी ने वह सारा पानी दूर फिंकवा दिया और हमें इसके बारे में किसी से

कुछ न कहने की हिदायत दी परंतु भविष्य में और चौकन्ना रहने के लिए कहा।

14. महाराज जी शुरू शुरू में सत्संग के लिए साईकिल से जाते थे। खतरा देखते हुए हमने उन्हें साईकिल पर न जाने की प्रार्थना की। इस पर बलवन्त सिंह ने महाराज जी को अपनी जीप में ले जाना शुरू कर दिया। एक शाम को महाराज जी अपनी चारपाई पर बैठे थे कि तभी मुझे सीमेंट का एक थैला उनकी चारपाई के नीचे पड़ा नजर आया। बताने पर महाराज जी ने कहा कि यह कोई बम भी हो सकता है। यह वाकई बम था और मुझे पता चल गया कि किस आदमी ने यह वहां रखा था। वह आदमी कुछ देर पहले महाराज जी के पांव में माथा टेककर गया था। कोई और आदमी उसे मोटर साईकिल पर वहां लाया था। उसे आने और जाने में पांच मिनट ही लगे थे। इतने में बलवन्त सिंह उस आदमी को जीप में बिठा कर ले आया जिसने कि बम रखा था। वह आदमी चिल्ला – चिल्ला कर इस बात की माफी मांग रहा था कि मैंने लालच में आकर यह पाप किया है। फिर मैंने वह थैला अपनी कमर पर उठाया और उस आदमी के साथ जीप में रखकर नदी में फेंक आये। उस आदमी ने बताया कि किसने उसे बम रखने के लिए 10 हजार रुपये देकर खरीदा था। उन्होंने वे पैसे उसके भाई को दिये थे। वह गिड़गिड़ा कर माफी मांगने लगा। हमें उससे पता चला कि यह टाईम बम था जो 2 घंटे में फट जाना था। इतने में कुछ लोगों को इस घटना का पता चल गया और वे उस आदमी को पीटने की तैयारी करने लगे परन्तु महाराज जी ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और कहा कि इसका ब्यान लेकर इसे जाने दो। महाराज जी ने उसके सच बोलने के कारण उसे माफ कर दिया। उस समय राम कुमार नाम का एक रिटायर्ड जज वहां था जिसने उसका ब्यान रिकार्ड किया। महाराज जी बोले कि प्रभु का धन्यवाद है कि हम सभी सकुशल हैं। इसके बाद महाराज जी जहां भी सत्संग पर जाते दो तीन आदमी उनके साथ जाते। कुछ विरोधी तत्व महाराज जी का सत्संग बन्द करवाना चाहते थे और उन को गालियां तक निकालते थे परंतु महाराज जी ने कभी भी किसी को उलट कर उत्तर नहीं दिया और बोले कि प्रभु

कृपा से यह समय निकल जायेगा। पांच साल तक विरोध का यह सिलसिला चलता रहा परन्तु महाराज जी बिल्कुल नहीं घबराए क्योंकि उन्हें यह काम करने का हुक्म मिला था। इसके बाद विरोध धीरे – धीरे खत्म हो गया।

15. एक बार सत्संग का प्रोग्राम रोहतक में था। हम महाराज जी के साथ थे। डाक देखते समय महाराज जी को डाक में एक नोटिस मिला जिस में लिखा था कि जिस मकान में हम रह रहे हैं उसे 15 दिन में खाली करना है । महाराज जी का प्रोग्राम रोहतक में 4 – 5 दिन ठहरने का था और नोटिस के अनुसार मकान खाली करने में केवल 5 दिन ही बाकी बचे थे। महाराज जी ने मुझे वह पत्र दिखा कर कहा कि अभी दिल्ली जाकर किसी नये मकान का पता करो नहीं तो टपरीवासों की तरह सड़क के किनारे तम्बू लगा लो। मैं बस द्वारा वापस दिल्ली आकर प्रताप बाग में स. आत्मा सिंह से मिली। वह रावलपिंडी से ही हमारा जानकार था और मुझे अपनी बहन की तरह समझता था। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने खड़े होकर मेरा स्वागत किया और बहुत खुश हुआ। तब मैंने उसे अपने मकान की मुश्किल के बारे में बताया। वह नामधारी सिख था और महाराज जी का भी बड़ा सम्मान करता था। उसने कहा कि आप मेरा सारा घर ले लो और मैं बाहर कहीं रह लूंगा। मुझे पता था कि महाराज जी इस बात से कभी सहमत नहीं होंगे, इसलिए मैंने उसे कोई और जगह ढूंढने को कहा। इसके बाद उसने मुझे यह स्थान दिखाया जहां आज सावन आश्रम रूहानी सत्संग स्थित है। उसने यह जमीन 20 साल के लिए 1 रुपया प्रति वर्ग गज प्रति वर्ष के हिसाब से लीज़ पर देने की पेशकश की और यह भी कहा कि जिस भी कीमत पर महाराज जी सहमत हों, वे ले सकते हैं। उस समय यह जगह बड़ी ऊबड़ – खाबड़ जंगल की तरह थी जिसमें बड़े बड़े खजूर के पेड़ थे। अगले दिन उसने आकर महाराज जी को बताया कि इस जगह पर आम तौर पर डाकू लोग अपना लूट का धन बांटते हैं। महाराज जी बोले कि अब तक यहां डाकू दुनियावी लूट का धन बांटते थे अब प्रभु के प्यारे प्रभु की लूट बांटेंगे। वह महाराज जी के साथ तहसील में लीज़ डीड तैयार करवाने के लिए

गया। महाराज जी ने उसे लीज की रकम पूछी तो उसने कुछ नहीं बताया। महाराज जी ने तब लीज पांच हजार रुपये प्रति साल 20 साल के लिए लिखवा दी। जब उन्होंने वापस आकर मुझे बताया तो मैं घबरा गई, क्या पांच हजार रुपये साल! यह तो बहुत ज्यादा है। आत्मा सिंह ने बताया कि क्योंकि महाराज जी ने पांच हजार रुपए खुद लिखा था इसलिए अनादर के कारण मैं कुछ न कह सका। एक दिन पहले भी महाराज जी ने मकान खाली करने के नोटिस के लिए पहले मालिक मकान का धन्यवाद किया था। वह आदमी नोटिस देने के लिए माफी मांग रहा था और धन्यवाद किए जाने के लिए हैरान था।

16. इसके बाद कई आदमियों ने महाराज जी को अपने घरों में रहने के लिए कहा परन्तु महाराज जी नहीं माने। एक ही सप्ताह में संगत ने ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल कर दिया। महाराज जी खुद खड़े होकर हर एक से सेवा करवाते, सब से प्रेम-भरी बातें करते। अगले और 10 दिनों में महाराज जी के लिए एक छोटा कमरा तैयार हो गया। 27 जुलाई, बाबा सावन सिंह जी का जन्म दिन भण्डारा कुछ ही दिन में आने वाला था। संगत ने दिन रात सेवा करके मेरे लिए भी एक कमरा बना दिया जिस के बरामदे को रसोई लिए बर्ता जाने लगा। एक और कमरा मंगत राम के लिए बना दिया गया। 12 छोटे कमरे तथा शौचालय टैंक आदि 27 जुलाई से एक दिन पहले तैयार हो गये।

17. 26 जुलाई को रात के 10 बजे महाराज जी ने गुरबख्श सिंह को जो किसी कारण नाराज हो गया था, बुलाकर लाने का विचार बनाया। महाराज जी ने उसे बड़ी नम्रता पूर्वक कई ढंग से प्रार्थना की परन्तु उसने कहा कि वह इतनी दूर निकल चुका है जहां से वापस आना अब मुश्किल है। ऐसा लगता था जैसे उसे धमकाया गया है या विरोधियों द्वारा खरीद लिया गया है। दुर्भाग्य से वह किसी तरह न माना और महाराज जी को असफल हो कर वापस आना पड़ा।

18. एक दिन रविवार के सत्संग से पहले महाराज जी ने मुझे शौचालय साफ करने को कहा ताकि अगले दिन आ रही संगत को कोई

मुश्किल न आये। मैंने अच्छी तरह सफाई की। आधी रात के समय महाराज जी ने मुझे शौचालय की सफाई के बारे में पूछा। मैंने कहा कि बिल्कुल सफाई कर दी है। परन्तु मुझे पता नहीं था कि मेरी सफाई के बाद किसी बजुर्ग आदमी ने शौचालय को गन्दा कर दिया है। इतने में महाराज जी बिना किसी को बताये शौचालय की तरफ गये और उन्हें गंदा पा कर खुद अपने हाथ से साफ किया। जब इस बात का मुझे पता चला तो मैंने माफी मांगी। फिर एक दिन और महाराज जी को मैंने शौचालय साफ करते पाया तो मैंने उन्हें विनती की कि यह सेवा मुझे करने दें जिस पर वे बोले कि ऐसी सेवा उस समय मैं ब्यास में भी करता था जिस समय कि देश के बंटवारे के समय डेरे में बहुत से लोग इकट्ठे हो गए थे। फिर उन्होंने मुझे शौचालय सफाई के बारे में किसी को कुछ न बताने का आदेश दिया।

19. एक बार रविवार के सत्संग पर एक सांप खेतों से निकलकर स्टेज के सामने आकर खड़ा हो गया। लोगों ने कहा कि सांप है, क्या इसे मार दें? महाराज जी कहने लगे कि इसे कुछ मत कहो। सांप ने सारा सत्संग खड़े होकर सुना और समाप्ति पर आराम से चल दिया। महाराज जी बोले कि जंगली जानवरों से भी अगर हमारा प्यार हो और उनके लिए दिल में कोई नुकसान पहुंचाने की भावना न हो तो वे हमें कुछ नहीं कहेंगे। महाराज जी ने शाम को इसी विषय पर सत्संग फरमाया। कहने लगे कि महापुरुषों को देखकर जंगली जीव भी अपनी जंगली आदतें छोड़ देते हैं। सादा और नम्रता-भरा प्यार सभी जानवरों के लिए होना एक आदर्श नियम है।

20. शुरू से ही महाराज जी बाबा सावन सिंह जी के जन्म दिन और चोला छोड़ने के दिन का भण्डारा मनाया करते थे। उनका अपना जन्म दिन नहीं मनाया जाता था। उस दिन वे हमेशा चुपचाप कहीं खिसक जाया करते थे। एक बार वे जन्म दिन से पहले इसी तरह उत्तर प्रदेश में खुर्जा के पास ओसामपुर गांव चले गये। उनको ख्याल था कि यहां किसी को मेरे बारे में पता नहीं चलेगा परन्तु कुछ लोगों को उनके बारे में पता

चल गया और तकरीबन 500 आदमी खुशी खुशी शब्द गाते हुए खुर्जा से उस स्थान के लिए पैदल निकल पड़े। रात का समय होने के कारण कभी कभी वे रास्ता भी भूल जाते थे। रास्ते में लोग उन्हें खाना और चाय देते रहे। अन्त में वे रात में 3 बजे के करीब उस स्थान के नजदीक पहुंच गये जहां महाराज ठहरे हुए थे। मैंने महाराज जी को यह बात बताई और उन्हें संगत को दर्शन देने के लिए प्रार्थना की। महाराज जी ने संगत के यहां आने से नाराज होकर ऐसा करने से इन्कार कर दिया। मैंने उन्हें विनती की कि आप जरा सोचिये यदि अपने सत्गुरु के पास आप इस प्रकार जाते और आपके सत्गुरु दर्शन देने से इन्कार कर देते तो आपके दिल पर क्या बीतती। यह सुनकर महाराज जी की आंखों में आंसू आ गये और वे एकदम संगत में दर्शन देने आ गये। वहां महाराज जी 4 से लेकर 6.30 बजे तक बैठे रहे और प्रेमपूर्वक बोले कि मैंने आपको मेरा जन्म दिन न मनाने के लिए प्रार्थना की थी परन्तु आप लोग बाज नहीं आये। महाराज जी ने अपने हाथों से सभी को प्रसाद बांटा और खुशी के मूड में आ गये। महाराज जी को खुश देखकर संगत ने नम्रता पूर्वक प्रार्थना की कि आप अपना जन्म दिन भविष्य में भी मनाने की इजाज़त दें। संगत का प्रेम देखते हुए महाराज जी को इस बात की सहमति देनी पड़ी। इस तरह महाराज जी का जन्म दिन मनाने का सिलसिला शुरू हो गया।

***

भाग – 4